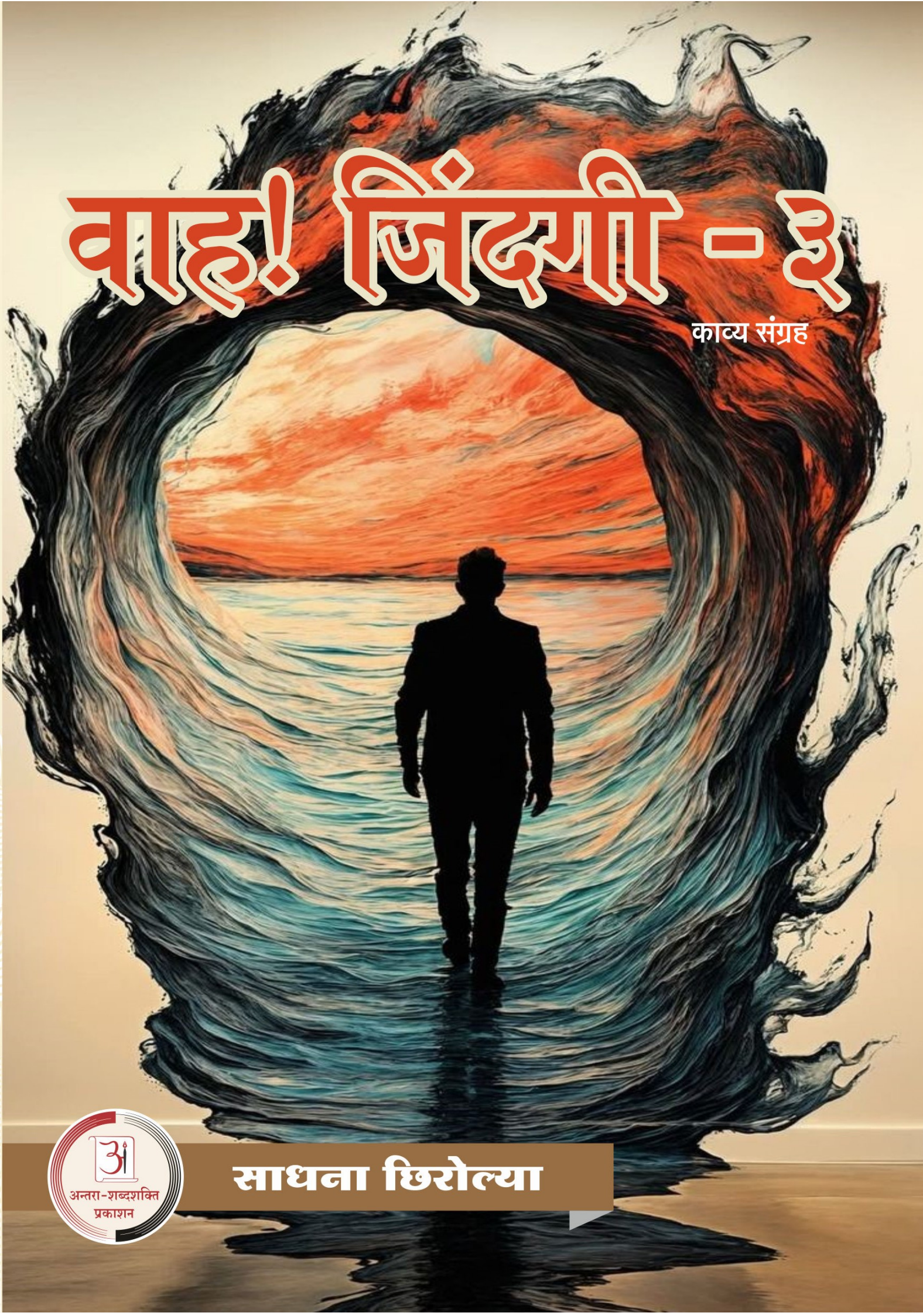
वाह! जिंदगी - ३
काव्य संग्रह
साधना छिरोल्या
अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

वाह जिंदगी- 3

(काव्य संग्रह)

साधना छिरोल्या

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)

978-93-94528-49-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2022, साधना छिरोल्या

मूल्य- 200.00 रूपये

मुद्रक- सोनी कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SADHNA CHHIROLYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

'विद्या, बुद्धि के हो दाता, मंगल करो सब काज,
हे गणाधीश! हे गणपति, तुम राखियो मेरी लाज।'

श्रीहरि की कृपा और आप सभी के स्नेहिल आशीर्वाद से मेरा प्रथम हिंदी काव्य-संग्रह 'वाह! ज़िंदगी' का तृतीय भाग आपके समक्ष उपस्थित है। मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है—वह अपने परिवेश में घटित जीवन-रंगों से प्रतिदिन गुज़रता है, उन्हें महसूस करता है, और वही अनुभूतियाँ कहीं न कहीं अभिव्यक्ति का रूप मांगती हैं। इन्हीं रंगों को शब्दों में संजोने का प्रयास इस बार भी मेरी लेखनी ने किया है।

जीवन के प्रति मेरी सकारात्मक सोच सदैव कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शक बनी है और आगे बढ़ने का संबल प्रदान करती रही है। बचपन से ही पढ़ने और लिखने का गहरा अनुराग रहा, जिसने समय-समय पर विविध सम्मान भी दिलाए। अंतरा शब्द शक्ति के मंच ने मेरे भीतर बसे रचनाकार को पहचान देने का जो अवसर प्रदान किया, उसी का परिणाम 'वाह! ज़िंदगी-3' (काव्य-संग्रह) के रूप में यह कृति है। यह मेरे साहित्यिक सफ़र की एक सार्थक उपलब्धि है।

मेरी सरल और सहज लेखनी ने हमेशा मुझे जनमानस से जुड़े रहने का अवसर दिया है। आपकी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद इसी प्रकार प्राप्त होते रहें—बस यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

मेरा काव्य-संग्रह 'वाह! ज़िंदगी-3' मेरे परिवार के आदरणीय स्तंभ, पूज्य गुरु-तुल्य श्रद्धेय कक्काजी(श्री सुदामा प्रसाद जी छिरोल्या) के चरण-कमलों में सादर समर्पित है।

आप सभी की शुभकामनाओं की सतत आकांक्षा।

– साधना छिरोल्या
दमोह (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	आंगन की तुलसी	5
2.	वीराआना रक्षाबंधन पर	6-7
3.	हिम्मत न हारना	8
4.	चल मन उजाले की ओर	9
5.	मन करता है	10
6.	आगे बढ़ना ही होगा	11
7.	किस्मत	12
8.	ताना-बाना	13
9.	कहीं बादल कहीं बिजली	14
10.	मनवा पागल उस पार चला	15
11.	ये चेहरे कैसे-कैसे	16
12.	लेना देना	17
13.	जिंदगी के खेल	18
14.	जीवन का मेला	19
15.	जय अंबे मां	20
16.	आई दिवाली	21
17.	सच्ची दिवाली	22
18.	मेरे प्रभु श्री राम	23
19.	वीर हनुमान	24
20.	मेरे कान्हा	25
21.	भगवान बुद्ध	26-27
22.	आओ एक काम करने चले	28
23.	मेरे देश की पावन माटी	29
24.	हिंदी मेरा अभिमान	30
25.	कही-अनकही	31
26.	सुरमई साँझ तले	32

आँगन की तुलसी

मेरे आँगन की तुलसी तो,
लगती मेरी अपनी सी।।

रोज सुबह जब जल मैं चढ़ाऊँ,
लगती बिल्कुल लक्ष्मी सी,
मेरे प्रभु के शीश है चढ़ती,
लगती है मुकुट जैसी।।

जब इसका श्रृंगार करूँ मैं,
लागे छोटी बहिना सी,
मेरी उदासी दूर है करती,
लगती सखी-सहेली सी।।

अपनी पीर है जब मैं सुनाऊँ,
लागे बिल्कुल माँ जैसी,
इसकी छाया में जब बैठूँ,
लगती बिल्कुल बाबुल सी।।

रक्षाबंधन, भाईदूज पर,
लगती प्यारे वीरा सी,
देखकर इसको तो मन में,
इतनी पवित्रता है जगती।।

नैवेद्य में जब है डलती,
लगती अमृत के जैसी,
रोज सुबह से इसका सेवन,
रोगों को दूर रखती।।

सुबह-सवेरे करूँ आरती,
सारे काम सफल करती,
शाम को जब दिया जलाऊँ,
मन का अंधेरा दूर करती।।

हाथ जोड़ कर करूँ मैं विनती,
तू तो मेरी मैया सी,
हरदम लाज राखना मेरी,
तू तो मेरी अपनी ही।।

मेरे आँगन की तुलसी तो
लगती बिल्कुल अपनी सी।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर एक बहन की प्यार और मनुहार भरी प्रेमपाती
देश की सरहद पर तैनात अपने वीर सैनिक भाई के नाम ---

आना रक्षाबंधन पर

तन-मन अपना न्योछावर कर,
खड़े हो डटकर सीमा पर,
मेरे प्यारे भैया तुम्हरी,
हम लें बलैयां जी भर कर।।

भेज रही हूँ पाती भैया,
स्नेह प्यार से सींचकर,
हो सके तो आना भैया,
पावन रक्षाबंधन पर।।

मां बाबुल हैं राह देखते,
तुम्हरे घर पर आने की,
भावज के हाथों भी सज गईं,
हरी चूड़ियां सावन की।।

ना सोना ना चांदी मांगू,
ना रुपया बटुआ भर भरकर,
हो सके तो जल्दी आना,
भैया रक्षाबंधन पर।।

सावन के मेले हैं सज गए,
हिंडोले भी देखो डल गए,
कजरी के मेले घूमेंगे,
हम सब देखो जी भर कर।।

मां बाबा भी अपने मुख से,
देखो कुछ ना बोलते,
एक आंख में गर्व के आंसू,
दूजे में विछोह के होते।।

प्यारी भावज भी है देखो,
कभी भी कुछ ना बोलती,
किंतु उनकी सूनी आंखें,
उनके दर्द बयां करती।।

दुश्मन टेढ़ी नजर गड़ाए,
ताक रहा है सीमा पर,
जल्दी उसका खात्मा करके,
आना रक्षाबंधन पर।।

घर का आंगन सूना-सूना,
मन का है हर कोना सूना,
खुशियां तुम बरसाने वीरा,
आना रक्षाबंधन पर।।

गर्मी, सर्दी, पानी में भी,
डटे हो तुम तो सीमा पर,
हम सब तो हैं घर में दुबके,
दो रजाई ओढ़ कर।।

मंदिर में राधे-गोविंद,
झूलें पींगें भर भर कर,
जल्दी आना मेरे वीरा,
हम भी झुलायें जी भरकर।।

अखाड़े भी देखो सज गये,
पहलवान तैयार भी,
कुश्ती,दंगल देखने आना,
अबके रक्षाबंधन पर।।

शिव को बेल की पात चढ़ाने,
और गंग की धार भी,
कान्हा जी को राखी बांधने,
आना रक्षाबंधन पर।।

गाँव की पावन माटी पर,
सावन की बूंदे बरस गईं,
सोंधी खुशबू लेने आना,
पावन रक्षाबंधन पर।।

भैया तुम्हरे कौड़ी-पांसे,
सब रखे संभालकर,
मिलकर सब अठ्ठू खेलेंगे,
आना रक्षाबंधन पर।।

कच्चा रेशम चुनचुन कर,
राखी बनाई प्यार से,
अपने हाथ से बाधूँ भैया,
आना रक्षाबंधन पर।।

हिम्मत न हारना

इस रंग बदलती दुनिया में,
एक बात गांठ में बांधना,
चाहे जितना भी रंग जाओ,
किंतु हिम्मत न हारना*।।

शतरंज की बाजी है बिछती,
यहां रोज बीच बाजार में,
चाहे जितना भी फँस जाओ,
किंतु हिम्मत न हारना*।।

इस मकड़जाल सी दुनिया में,
फंदे बने फरेब के,
इनमें उलझ भले ही जाओ,
किंतु हिम्मत न हारना*।।

एक दूजे की टांग खींचता,
हर इंसा नजर आता,
चाहे कितना भी फंस जाओ,
किंतु हिम्मत न हारना*।।

हारा वही जो लड़ा नहीं,
जीवन की रेलम_पेल में,
जीत की राह लगे लंबी,
किंतु हिम्मत न हारना।।

चल मन उजाले की ओर

चल मन उजाले की ओर,
थाम कर ऊंची सोच की डोर,
काम, क्रोध और कर्कश वाणी
लालच की छोड़कर डोर।।

चल मन उजाले की ओर,
छोड़कर ऊंच-नीच की डोर,
गंग-जमुन सी पावन सृष्टि,
माया-मोह की छोड़कर डोर।।

पाप-पुण्य की बाँध गठरिया,
थाम ले निर्मल मन की डोर,
इतनी सुंदर प्रभु की सृष्टि,
चल मन उजाले की ओर।।

चल मन उजाले की ओर,
थाम कर स्नेह-प्यार की डोर,
कुदरत के सब बंदे प्यारे,
नफरत की छोड़कर डोर।।

दया,अहिंसा का दामन,
और थाम ले सच की डोर,
उसकी रहमत की पकड़ चुनरिया,
चल मन उजाले की ओर।।

मन करता है

मन करता है तितली जैसे,
पंख लगा कर मैं उड़ जाऊं,
ऊंचे पर्वत, दूर देश की,
मैं भी सैर कर के आऊं।।

हम भी बचपन में सुनते थे,
परियाँ रहतीं दूर देश में,
मन करता है एक बार फिर,
उनके देश में पहुँच ही जाऊं।।

माँ सुनाती थी एक लोरी,
चंदा मामा दूर के,
मन करता है एक बार फिर,
दूर गगन में मिलकर आऊँ।।

बचपन में सोचा करती थी,
गुब्बारे कहां उड़कर जाते,
मन करता है उड़कर जाकर,
उनका पता लगाकर आऊँ।।

दोनों हाथों को फैला कर,
पंछी जैसे मैं उड़ जाऊं,
रिमझिम सी बूंदाबांदी में,
झूम झूम कर नाचूं गाऊं।।

मन करता है एक बार फिर,
जल प्रवाह सा बहता जाऊँ,
नदी के दूजे तट को मैं,
एक बार तो छूकर आऊं।

मन की सारी छोड़ उलझनें,
दोनों हाथों को फैलाऊँ,
इन प्यारे पंछी के जैसे,
एक उड़ान तो भरकर आऊं।।

आगे बढ़ना ही होगा

मन मस्तिष्क की तोड़ दीवारें,
आगे बढ़ना ही होगा,
जीवन है कांटों की बगिया,
बच के चलना ही होगा।।

रोज होंगी नई चुनौतियाँ,
सामना करना ही होगा,
इनके समाधान की खातिर,
संयम रखना ही होगा।।

इस संसार सागर को,
पार तो करना होगा,
जीवन की धूप छांव में,
सबको तपना ही होगा।।

सम-विषम परिस्थितियों में,
धीरज रखना ही होगा,
ऊंची सोच की बाँध पोटली,
आगे बढ़ना ही होगा।।

संसार एक जाल है प्यारे,
हरदम फँसना ही होगा,
इस मकड़जाल को काट के,
आगे बढ़ना ही होगा।।

बोझ समझ या जिम्मेदारी,
त्याग करना ही होगा,
तोड़ के सारे बंधन तुझको,
आगे बढ़ना ही होगा।।

किस्मत

ये किस्मत भी न जाने कब,
कैसा खेल खिला जाए,
एक गिद्ध के मुंह पर एक,
सांप ही ताला लगा जाए।।

शिकारी जो घात लगाता था,
कभी अपने देखो शिकार का,
वही शिकार न जाने,
कब शिकारी बन जाए।।

यह समय का खेल है प्यारे,
सबकी समझ में न आए,
जीवन के ये दाँव-पेंच,
कब जाने पलटा खा जाए।।

विद्वत्ता व मूर्खता,
हर आयु वर्ग में उपलब्ध है,
सोच समझकर बोल तू प्यारे,
कब चाल न उल्टी पड़ जाए।।

जीवन सरल नहीं है प्यारे,
कब कौन सी बाजी बिछ जाए,
यहां शतरंज की चालें हैं चलतीं,
कब मात तुझे है मिल जाए।।

जिंदगी

जिंदगी का ताना-बाना,
बुनता रहा जिंदगी भर,
जिंदगी है एक पहेली,
सुलझाता रहा जिंदगी भर।।

जिंदगी की कश्ती को,
किनारा भी न मिला,
साहिल की तलाश में,
घूमता रहा जिंदगी भर।।

खूब हाथ-पैर मारे
उत्तर एक न मिला,
मकड़जाल सा देखो तो,
फँसता रहा जिंदगी भर।।

अपनी इस जिंदगी में,
कैसे खुशियां भरूँ,
इसी उधेड़-बुन में फिर,
फिरता रहा जिंदगी भर।।

उड़ती पतंग सी जिंदगी,
कैसी गुजारी मैंने,
कठपुतली के जैसा मैं,
नाचता रहा जिंदगी भर।।

मिट्टी की काया है,
यह तो विसरा गया,
ऊपरी देख-रेख,
करता रहा जिंदगी भर।।

कहीं बादल कहीं बिजली

आसमान में छाती यह बदलियां,
संग साथ मन में भी उमड़ घुमड़ कर छाती,
सतरंगी अतरंगी यादों की बदलियां ....

बिन मौसम बरसात में, चमकती ये बिजलियां ....
मन मस्तिष्क में धक-धक कर,
आर पार कर जाती ये बिजलियां,
कभी किसी अनहोनी की याद दिलाती,
तो कभी किसी सुखमय पल को,
ले आती है ये बिजलियाँ।।

और फिर आती है बारिशें ....
कभी बचपन वाली,
संग कागज की नाव वाली,
कभी अपने भयावह रूप में,
बहुत कुछ उजाड़ती,
आसमान में छाती ये बदलियां ....

कहीं बादल कहीं बिजली,
और यह बारिश देखो,
कभी होती सुहावनी,
तो कभी होती डरावनी,
और चमकती ये बिजलियाँ ....

मनवा पागल उस पार चला

मनवा पागल उस पार चला,
कुछ अपने मन की करने चला,
चाँद, चाँदनी तारों के संग,
गीत-संगीत सुनाते चला।।

कुछ दर्द छुपाकर सीने में,
खुशियों की चाहत में ये चला,
अल्फाज नहीं हैं होठों पर,
चाहत की तलाश में दूर चला।।

नीचे दुखों का दरिया है,
और चक्रव्यूह सा जकड़ा है,
ये सारे बंधन तोड़ के,
साहिल की तलाश में दूर चला।।

अजनबी साथी जीवन के,
सुख-दुख दोनों आयेंगे,
जिंदा हो तो जी लो जी भर
यह संदेश*सुनाता चला।।

जो बीत गया सो बीत गया,
वह समय कभी न आएगा,
अपने सुख और चैन की खातिर,
अपने मन की करने चला।।

सबके मन की करते-करते,
थक हार अब दूर चला,
मनवा पागल उस पार चला,
कुछ अपने मन की करने चला।।

ये चेहरे कैसे कैसे

हर इंसा के दो दो चेहरे,
इनको मैं पहचानूं कैसे,
छल प्रपंच मैं न ही जानूँ,
दिन जीवन के गुजारुं कैसे।।

कभी स्वेत तो कभी स्याह से,
उजले काले मन के ऐसे,
दुनियादारी मैं न जानूं,
दिन जीवन के गुजारुं कैसे।।

कभी देव तो कभी दैत्य से,
इनके तो व्यवहार है लगते,
ये चेहरे पहचान न पाऊं,
दिन जीवन के गुजारूं कैसे।।

कभी तो अमृत जैसे बनते,
कभी गरल के घट हैं बनते,
उल्टी भाषा मैं न जानूँ,
दिन जीवन के गुजारुं कैसे।।

जाने-अनजाने से चेहरे,
चंदन और अनल के जैसे,
अपना पराया मैं न जानूँ,
दिन जीवन के गुजारुं कैसे।

लेना देना

इंसान की फितरत हो गई ऐसी,
ईमान से क्या लेना देना,
झूठ, फरेब और मक्कारी,
बेईमानी का चोला पहना।।

ऐसी नीयत हो गई इनकी,
विष का ही घट बनकर रहना,
इधर-उधर की बातें करके,
अपना उल्लू सीधा करना।।

सबसे ऊपर स्वार्थ को रख के,
ईश्वर से भी नहीं है डरना,
इनका तो बस एक ही धर्म है,
झूठ ही लेना झूठ ही देना। ।

मेहनत से तक़दीर संवरती,
इस बात को कभी न समझना,
दूजे की मेहनत की कमाई,
सदा देखो ही हड़पना।।

पाप कर्म से नहीं है डरते,
आस्तीन का साँप है बनना,
मुँह में राम बगल में छुरी,
यही है बस इनका गहना।।

एक दूजे पर बाण चलाकर,
सदा ही जहर उगलना,
छाती में है घाव बनाकर,
ऊपर से है नमक छिड़कना।

जिंदगी के खेल

न सौभाग्य पर इतराईये,
न दुर्भाग्य को कोसिये,
ये जिंदगी के खेल हैं,
बस खेलते चलिये।।

दूजे की आमदनी से,
डाह भी न कीजिए,
आलस को त्याग प्यारे,
खूब मेहनत कीजिए।।

कभी अर्श कभी फर्श,
यही तो है जिंदगी ,
तो जीवन के मोड़ पर,
शांति बनाए रखिए।।

कभी हार कभी जीत,
जीवन की रीत है,
आशा की डोर थाम,
सदा आगे बढ़िये।।

जात-पाँत, भेद-भाव,
छोड़कर सब चलिये,
मन्नतों के धागे बांध,
शुभ काम कीजिए।।

जीवन का मेला

जीना मरना, मरना जीना,
यह तो सब ईश्वर का खेला,
नेकी की बस राह चले हम,
यह दुनिया तो है एक मेला।।

रोज ही होते नए तमाशे,
कठपुतली सा नाच नचाते,
इतनी कठिन है डगर जीवन की,
हर आदमी लगे अकेला।।

सिक्के के दो पहलू जैसे,
जीवन के ये चरखे चलते,
सुख-दुख का है लगता मेला,
यह दुनिया तो है एक मेला।।

सांसों की माला को थामे,
चलता है जीवन का खेला,
ऊंची सोच सदा ही रखना,
यह दुनिया तो है एक मेला।।

यहीं देखने को मिलते हैं,
अपने कर्मों के प्रतिफल भी,
धर्म ध्वजा फहराते चले हम,
यह दुनिया तो है एक मेला।।

जय अम्बे माँ

हे जगत् जननी,
हे अम्बे दयालु,
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना।।

वो माँग का टीका,
और माथे की बिंदिया,
मेरे माँग का सिंदूर,
सजाये ही रखना।।
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना।

वो नाक की नथनी,
और कान के झाले,
मेरे गले का हरवा
चमकाये ही रखना।।
अपनी ममता ....

वो बाजू बंद,
वो चूड़ी और कंगन,
मेरे हाथों की मेहँदी,
रचाये ही रखना।।
अपनी ममता ....

वो कमर की करधन,
वो पायल और*बिछिया,
मेरे पाँव का माहुर
लगाये ही रखना।।
अपनी ममता ....

वो बालों का गजरा,
वो लहँगा और साड़ी,
मेरे चूनर की लाज,
बचाये ही रखना।।
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना"।।

बस इतनी सी,
आरजू है हमारी,
अपनी शरण में हमको,
बसाये ही रखना।।

आई दिवाली

कार्तिक का महीना है आया,
देखो इतनी खुशियां लाया,
जगमग सी दीवाली आई,
जन-जन में खुशहाली छाई।।

गणपति जी सद्बुद्धि लाये,
खील बताशे खूब लुटाए,
लक्ष्मी जी धन दौलत लाईं,
यश वैभव भी संग में लाईं।।

द्वारे आंगन खूब लिपायें,
बहू बेटी रंगोली सजायें,
घर घर तो है महके सबके,
खुशियों से मन झूमें सबके।।

छप्पन भोग भी खूब बनाए,
फल मेवा भी खूब सजाये,
सबसे ऊपर श्रद्धा भक्ति,
तभी प्रभु कृपा बरसाए।।

छतों पर कंदीलें लग गई,
दीपों की कतारें सज गईं,
बिजली की लड़ियां है चमकी,
फूलों की माला भी सज गई।।

चकरी, फुलझड़ी,अनारदाना,
बड़ों के है साथ जलाना,
इतनी सी है बात मानना,
मिट्टी के ही दीप जलाना।।

सच्ची दिवाली

आंगन द्वारे खूब लिपाए,
खिड़की दरवाजे चमकाये,
घर के कोने-कोने की,
साफ-सफाई खूब कराये।।

किंतु मानुष भूल गया रे,
सबसे पहले मन चमकाले,
खूब दिमाग में कचरा पाले,
पहले तो तू उसे हटा ले।।

ईर्ष्या, द्वेष, डाह, लालच का,
कैसा मकड़जाल बुना रे,
अपने अंतर्मन में झांक के,
पहले उसकी शुद्धि कर ले।।

खूब मनाई ऊपरी दिवाली,
अब तो अंतः में भी मनाले,
एक दीपक घर की चौखट पर,
एक दीपक अंतः में जला ले।।

लक्ष्मी के संग गणपति को भी,
अपने मन स्थापित कर ले,
तभी मनेगी सही दिवाली,
रे मानव! अब कुछ तो सीख ले।।

मेरे प्रभु श्री राम

"मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते,
मेरे प्रभु श्री राम,
आदर्शों के मूल आपको,
कोटि-कोटि प्रणाम।।

प्रेम भाव हो या हो बड़प्पन,
खूब दिखाते राम,
मात-पिता की आज्ञा को तो
सिर राखें भगवान।।

सखाभाव हो, भक्तिभाव हो,
चाहे मोक्ष प्रदान,
मेरे प्रभु की लीला न्यारी,
कोटि-कोटि प्रणाम।।

एक-दूजे के पूरक हैं,
राम और हनुमान,
हनुमान की भक्ति के बिन,
नहीं मिलें भगवान।।

मर्यादा की आप मिसाल हो,
सुन्दर पावन नाम,
सदा हमारे हृदय में बसना,
मेरे सीताराम"।।

वीर हनुमान

आओ हम सब महिमा गायें,
महावीर हनुमान की
शिव जी के उन्नीस अवतार में,
एक अवतार हनुमान जी।।

चैत्र पूर्णिमा मंगल के दिन,
जन्म लिए हनुमान जी,
पिता का नाम केसरी पावन,
संकटमोचन हनुमान जी।।

माता अंजनी के गर्भ से,
जन्म लिए हनुमान जी,
वानर रूप में अवतार लिए,
पवन पुत्र हनुमान जी।।

सखा रूप और भक्त रूप में,
मदद करी श्री राम की,
सब के संकट को हैं हरते,
जय बोलो हनुमान की।।

पावन नाम और बलशाली,
हैं देखो हनुमान जी,
महावीर जिनका नाम है,
जय बोलो हनुमान की।।

मेरे कान्हा

आओ कृष्ण मुरारी आओ,
छैल-छबीले यूँ न सताओ।।

दध की मटकी,जल की गघरी,
आज पड़ी है खाली-खाली,
तुम बिन मेरो मन न लागे,
क्या करूँ मैं कोई बताओ।।

नयनों की बातें कोई न जाने,
लिखूं मैं पाती मन भरमाने,
तुम बिन जियरा भर-भर आये,
क्या करूँ मैं कोई बताओ।।

सारी मेरी सखी-सहेली,
भूल गईं सब हँसी-ठिठोली,
रातों में निंदिया न आये,
क्या करूँ मैं कोई बताओ।।

तुम मेरे करुणा के सागर,
कृपानिधान दया भरे,
विरह में जीना भूल गए हैं,
क्या करूँ मैं कोई बताओ।

तेरी ही शरण में कान्हा,
मेरी नैया पार लगाओ,
मेरे तो गिरधर गोपाला,
छैल-छबीले यूँ न सताओ।।

महात्मा बुद्ध

आओ आओ एक बात बतायें,
गौतम बुद्ध की कथा सुनाएं,
कहतीं थीं दादी और नानी,
उनकी कहानी मेरी जुबानी।।

एक दिन गौतम बुद्ध देखो,
बैठे थे बिल्कुल चुपचाप,
उनको इस दशा में देखकर,
शिष्य हो गए बहुत हताश।।

लगे सोचने गुरुवर का,
स्वास्थ्य आज बिगड़ गया,
या जाने-अनजाने में ही,
कोई अपराध हो गया।।

बार-बार तो सभी शिष्य,
गुरुवर से हैं पूछते
किंतु गुरुवर आज देखो,
कुछ भी है न बोलते।।

तभी अचानक दूर से,
एक आवाज गूंज गई,
आज सभा में बैठने की,
अनुमति क्यों नहीं मुझे मिली।।

बुद्ध आंखें बंद करके,
ध्यान मग्न हो गये,
फिर से वह शिष्य चिल्लाया,
कुछ नहीं क्यों बोलते।।

इसी बीच एक उदार शिष्य भी
बीच में ही बोल पड़ा,
उसे सभा में आज क्यों,
आसन देखो नहीं मिला।।

बुद्ध ने आंखें खोली,
और शांत भाव से यह कहा,
यह व्यक्ति अछूत है,
इसलिए आसन नहीं मिला।।

इस बात पर सभी शिष्य,
एक स्वर में बोलने लगे,
हमारे आश्रम में तो कभी,
छुआछूत होते नहीं।।

तब गुरुवर ने आंखें खोलकर,
अपनी बात आरंभ की,
वह व्यक्ति तो आज देखो,
है बिल्कुल अछूत ही।।

बोले गुरुवर मेरी बात,
ध्यान से है सब सुनो,
क्रोध करके अपना जीवन,
तुम नष्ट तो न करो।।

क्रोध से जीवन की देखो,
एकाग्रता भंग होती,
और उसके हाथों से,
मानसिक हिंसा है होती।।

इसलिए व्यक्ति जब देखो,
क्रोधित अवस्था में होता,
उस समय वह व्यक्ति तो,
अछूत के समान ही होता।।

इसलिए कुछ समय तक
उसे यह करना चाहिए,
कुछ समय एकांत में,
खड़े रहना चाहिए।।

गौतम बुद्ध की बातों को,
शिष्य ने है सुन लिया,
फिर वह पश्चाताप की,
अग्नि में जलने लगा।।

भगवान बुद्ध के चरणों में,
जाकर वह गिर पड़ा,
फिर से क्रोध न करने का,
निश्चय भी है कर लिया।।

क्रोध करने से तन,मन,
और धन की हानि होती,
इससे ज्यादा हानिकारक,
और कोई बात नहीं होती।।

क्रोध करने से व्यक्ति,
अनर्थ भी है कर देता,
अपने साथ औरों को,
दुखी भी है कर देता।।

भगवान बुद्ध के ज्ञान से,
जीवन भी सफल होता,
हमारी कई व्यथाओं का,
निवारण भी देखो होता।।

आओ एक काम करने चलें

आओ एक काम करने चलें,
अपने पूर्वजों को नमन करने हम चलें,

पहुंचे जो इस मुकाम तक, आशीष प्यार की छाया में,
कुछ तो आज अपना, फर्ज निभाने चलें।।

संस्कार अपने, विरासत में सौंपे,
उनका ही दामन थाम, आगे बढ़ते चलें।।

पितृ पक्ष में पूर्वजों की, याद ताजा कर चलें,
उनकी त्याग, तपस्या को, नमन करने हम चलें।।

चंदन सी पावन, जो स्मृतियां शेष हैं,
पोटली में बाँध उनको, सीने से लगा चलें।।

सच्ची श्रद्धा से, पिंडदान करके ही,
उनकी आत्मा को, तृप्त करने हम चलें।।

आए हैं पूर्वज, जो हमें आशीष देने,
हम भी आज अपने, कर्तव्य पथ पर चले चलें।।

मेरे देश की पावन माटी

"देश की पावन माटी,
मैं शीश पर लगाता हूँ,
आज इसकी रक्षा की,
कसम भी में खाता हूँ।।

कितने शहीदों का रक्त बहा,
कितनी माओं की गोद उजड़ी,
कितनी बहिनों के वीर छिने,
तब आजादी हमें मिली।।

माँग का सिंदूर छिना,
जाने कितनी सुहागिनों का,
हृदय के भी लाल छिने,
जाने कितने पिताओं के।।

बस अब बहुत हुआ
अब ये वादा रहा तुमसे
हे मेरी भारत माँ

जो इस पर आंख उठायेगा,
वो धूल में मिल जायेगा,
चाहे दुश्मन कोई भी हो,
अपनी हस्ती मिटवायेगा

फिर से बसंत आयेंगे,
खुशियों के गीत गायेंगे,
टेसू और गुलमोहर के,
रंग बिखर जायेंगे।।

पीली सरसों की भी चादर,
इस पर तो बिछ जायेगी,
धानी चूनर ओढ़ के ये तो,
खुशियाँ भी बिखरायेगी।।

जूही,बेला और चमेली,
अपनी खुशबू फैलायेंगे,
गेहूं,चना,बाजरा के भी,
खेत लहलहायेंगे।।

देश की पावन माटी,
मैं शीश पर लगाता हूँ"।।

हिंदी मेरा अभिमान

लिखती सुंदर दिखती सुंदर,
मीठी खुशबू इसके अंदर,
चंदन के जैसी है पावन,
गंगा जैसी बहती निर्झर।
हिंदी है महान
हिंदी मेरी पहचान।।

कितनी विधाएं इसके अंदर
कितनी कलाएं इसके अंदर
पावन संस्कृत से है निकली,
जाने कितने रूप हैं अंदर।।
नौ रसों की खान
हिंदी मेरी पहचान।।

गोविंद दास ,गुप्त, द्विवेदी,
और काका कालेलकर,
राष्ट्रभाषा इसे बनाने,
आंदोलन करते जीवन भर
सब करते हैं गुणगान
हिंदी मेरी पहचान।।

मेरे मन के भावों को,
करती है उजागर,
एक हजार वर्षों से देखो,
प्रगति की है राह पर
यह हिंदी है महान
हिंदी मेरी पहचान।।

सबको रखती सदा जोड़कर,
माटी की महक है इसके अंदर,
मन का अंधेरा दूर करती,
तम से तेज की ओर बढ़ाकर,
हमें इस पर अभिमान
हिंदी मेरी पहचान।।

भारत को विश्व गुरु बनाने,
सबको यह एहसास दिलाती,
हिंदी भाषा का राष्ट्रीय और
साँस्कृतिक महत्व देखो दर्शाती,
हम सबका है गर्व बढ़ाकर
देश विदेश में मान बढ़ाती,
भारत की यह शान
हिंदी मेरी पहचान।।

कही अनकही

ऊंची सोच का दामन थाम के,
आगे कदम बढ़ाए जा।।

अनाचार का दामन थामे,
एक कदम जो बढ़ाएगा,
भीड़ भरी इस दुनिया में,
अकेला तू रह जाएगा।।

ओछी सोच का पहन के जामा,
एक कदम जो बढ़ाएगा,
संगी साथी तेरे अपने,
किसी को साथ न पाएगा।।

इस दुनिया का एक उसूल है,
जो बांटा वह पाएगा,
इसी बात को याद रख के,
आगे कदम बढ़ाए जा।।

कही अनकही इन बातों को,
दामन में गांठ लगाए जा,
ऊंची सोच का दामन थाम के,
आगे कदम बढ़ाए जा।।

सुरमई साँझ तले

चलो आज एक काम करने चलें,
ऐसी सुहानी सुरमई साँझ तले,
चार यार मिलकर गप्पे लड़ाने चलें।।

वो प्यारे से बचपन की सुनहरी सी यादें,
वो स्कूल कॉलेज गृहस्थी की बातें,
दो-चार गोते उनमें लगाने चले,
चार यार मिलकर गप्पे लड़ाने चलें।।

वो गिल्ली वो डंडा और कंचे की खनखन,
पतंग की डोर और माझे की उलझन,
कुछ प्यारी सी यादों की,
चकरी लपेटने चले।।
चार यार ....

वह कागज की नाव
वो वर्षा का पानी,
वह प्यारे से लड़कपन की प्यारी शैतानी,
कुछ यादों की छुपम छुपाई खेलने चले।।

कुछ स्कूल कॉलेज की,
प्यारी सी बातें,
कुछ कड़वी कुछ मीठी कुछ सतरंगी यादें
आज फिर से हाजिरी देने चले।।

कुछ रोजमर्रा गृहस्थी की बातें,
कुछ जीवन की सरगम की सतरंगी गांठे,
कुछ नए मोती और पिरोने चलें,
ऐसी सुहानी सुरमई साँझ तले,
चार यार मिलकर गप्पे लगाने चले।।

नाम - **साधना छिरोल्या**
पति - श्री कैलाश छिरोल्या
जन्म - 17 मार्च 1964, जबलपुर (म.प्र.)
शिक्षा - बी.एस.सी. बी.एड.(गणित)
पता - यूनियन बैंक के सामने, राय चौराहा, दमोह (म.प्र.) 470661
मो. - 8770314264
ई. मेल - sadhnachhirolya123@gmail.com

प्रकाशन - गहोई सूर्य अखबार (जबलपुर), गहोई संस्कार पत्रिका (जबलपुर), गहोई बंधु पत्रिका (ग्वालियर), दैनिक स्वदेश (ग्वालियर), लोकजंग (भोपाल), वाह! जिंदगी- भाग1 एवं भाग 2 (हिंदी काव्य संग्रह), एक टुकड़ा मेघ (हिंदी कथा संग्रह), प्रभाश्री पत्रिका (वाराणसी उ.प्र.), दैनिक स्वदेश वार्षिक पत्रिका 1 एवं 2, क्रांतिबोल पत्रिका 1 एवं 2, वूमेन आवाज पत्रिका, वाह! जिंदगी- भाग 1 एवं भाग 2 (हिंदी काव्य संग्रह), आपातकाल में सृजन फुलवारी (हिंदी काव्य संग्रह)। एक टुकड़ा मेघ, त्योहारों के रंग काव्य के संग भाग 1 एवं 2,

साझा संकलन - 1. कश्तियों का सफर (काव्य संकलन), 2. उम्मीदों के परिंदे (काव्य संकलन), 3. यादों का सफर (यात्रा वृतांत),4. वुमन आवाज पत्रिका, 5. स्त्रीत्व, 6. दिव्य रश्मि (काव्य संकलन), 7. वनिता संस्मरण मंजूषा, 8. अनोखा वर्ष 2020, 9. गहोई रश्मि (काव्य संकलन), 10 आधी आबादी, 11. भाव भाषा निर्झरिणी, 12. कोरोना काल एवं साहित्य ग्राम, 13. प्रथम स्रजक, 14. आजादी के अमरदीप, 15. सम सामयिक लघुकथाएं, 16. कलम से पन्नों तक, 17. साहित्य सरोवर, स्त्री 2,18. मानवता पर संकट, 19. स्त्री तुम सृजक आदि।

सम्मान - भाषण, नाटक, वाद-विवाद, तात्कालिक निबंध, कविता, सुलेख प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त। गहोई समाज और हितकारिणी स्कूल जबलपुर द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिये सम्मानित। अंतरा शब्द शक्ति सम्मान2019, मातृभाषा उ.संसथान द्वारा हिंदी योद्धा सम्मान, हिंदी साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान2019, कवि चौपाल शारदा सम्मान, अंतरा शब्दशक्ति द्वारा कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार, अ. भा.सा.परि. विराटनगर जयपुर द्वारा सर्वश्रेष्ठ सृजन 'साहित्य गौरव' पुरस्कार, काव्य गोष्ठी सबके लिये द्वारा उत्कृष्ट सृजन पुरस्कार, प्रभाश्री द्वारा साहित्य सम्मान, वुमेन आवाज द्वारा महिला दिवस साहित्य सम्मान, साहित्यिक मासिक स्पर्धाओं में सम्मान, साहित्यिक मित्र मंडल जबलपुर द्वारा अनेक साहित्यिक पुरुस्कार, मीन साहित्यिक संस्था द्वारा लघुकथा के लिए विशेष पुरुस्कार, कृष्ण कलम मंच द्वारा वॉइस ऑफ हार्ट काव्य पुरस्कार, स्वरश्री पुरस्कार, शब्द कोविद सम्मान, समय साक्षी सम्मान 2020, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, स्नेह सेतु सम्मान, कलम के सिपाही सम्मान, वनिता साहित्यमणि अलंकरण सम्मान, गहोई रश्मि साहित्य मणि पुरस्कार, एवं अन्य लेखन पुरस्कार के साथ साथ 400 से अधिक सम्मान पत्र प्राप्त

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-49-9
मूल्य- 200/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com